नीता सैनी

शिकायत और ग्लानि

ई-मेल:neetasaini15@gmail.com

एक स्त्री ऊपर की पहाड़ी से उतरकर नीचे सड़क पऱ जा रही थी। सड़क पर उतरने में अभी तीन-चार सीढ़ियाँ बाकी थीं, अचानक स्त्री का पैर फिसला और वो लुढ़ककर सडक पर जा गिरी।

थोड़ा सम्भलकर स्त्री ने दाएँ-बाएँ देखा, उससे लगभग दस कदम की दूरी पर एक ग्रामीण दिखा। 'ओये, ओये, ओये...' बोलते हुए वो तीन-चार कदम तेजी से आगे बढ़ा।

सहसा वो ठहर गया। अभी तक स्त्री सहायता के लिये उसी की ओर देख रही थी। पुरुष को दूर ही रुका देखकर वो खुद-से सीधी होकर बैठी; थोड़े अपने कपड़े सही किये और फिर अपना बिखरा सामान समेटने लगी।

स्ट्रीट लाइट के सामने पेड़ की परछाई आ रही थी जिसकी वजह से वहाँ थोड़ा अंधेरा भी था।

अपना सामान उठाकर स्त्री खड़ी होने लगी तो अपने घुटनों पर हाथ रखकर दर्दभरी आवाज में बोली, "हाय मेरी माँ।"

पुरुष ने फिर अपना हाथ थोड़ा आगे किया और अपना एक पैर भी आगे बढ़ाया ही था कि फिर वहीं खड़ा रह गया।

स्त्री 'हाय-हाय' करती कभी अपने घुटने पर हाथ रखती, तो कभी अपने कूल्हे पर। झुककर उसने अपने पैर का पंजा भी दबाकर देखा।

पेड़ के पत्तों के बीच से झरकर आती स्ट्रीट लाइट की चमक में दिखा कि स्त्री की बाँह से खून रिस रहा है।

पुरुष के मुँह से 'च्च च्च...' की आवाज़ आई।

अपना झोला कंधे पर टाँग, कराहरती हुई स्त्री, पुरुष की ही दिशा में चलने लगी। बराबर से निकलते हुए स्त्री ने पुरुष को शिकायती नजरों से देखा।

स्त्री को देखते-देखते पुरुष की नजर जमीन में गड़ गई। उसके दोनों हाथ जुड़े और उसके मुँह से निकला—''मैडम जी, माफ़ करना, मैंने पी रखी है।''